मोहल्ले में अपनी जगह : मोहल्ला एलएसी

ज़रूरतमन्द बच्चों के साथ अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र का एक मॉडल

क्षमा यादव, खेमप्रकाश यादव, निदेश सोनी

इस मॉडल की ज़रूरत क्यों पड़ी ?

कोविड-19 के भारत में आने की सुगबुगाहट के साथ ही एक अजीब-सी अनिश्चितता का माहौल बनने लगा था। लोगों से घरों में रहने और तमाम एहतियात बरतने की अपील की जा रही थी। तक़रीबन मार्च 2020 से पूर्ण तालाबन्दी शुरू हो गई। तालाबन्दी के कई दौर गुज़रे, कुछ कार्य-व्यापार शुरू किया गया, कुछ को फिर से बन्द किया गया। पर इनमें एक बात थी जो बदली नहीं थी। हर बार प्राथमिक व माध्यमिक स्कूलों को बन्द ही रखा गया था, जो आज तक भी बन्द हैं।

शहरों के बड़े और महँगे निजी स्कूलों ने ऑनलाइन माध्यमों से बच्चों को जोड़े रखने की पुरज़ोर कोशिश की है, सरकारी विद्यालयों में भी ऑनलाइन पढ़ाई को अपनाया गया। परन्तु दूर-दराज़ के गाँवों एवं आदिवासी अंचलों में कमज़ोर आर्थिक स्थिति वाले व ज़रूरतमन्द बच्चे कई कारणों से इन ऑनलाइन प्रयासों को ठीक से अपना नहीं सके, या इनसे जुड़ नहीं सके। वैसे भी प्राथमिक व माध्यमिक सरकारी स्कूलों में नामांकित ज़्यादातर तबक़ा निम्न आय वर्ग और ज़रूरतमन्दों की श्रेणी से आता है। साथ ही इनमें ज़्यादातर वह लोग हैं, जो अपने दैनिक जीवन यापन के लिए रोज संघर्ष करते हैं। तालाबन्दी ने एक ओर जहाँ इस संघर्ष को कठिन बनाया, और आजीविका कमाना प्राथमिकता बन गया था, वहीं दूसरी ओर ऐसे समय में बच्चों की शिक्षा और भी हाशियाकृत हो गई, क्योंकि ऑनलाइन माध्यमों से पढ़ाई के लिए हमेशा संसाधनों की ज़रूरत होती ही है।

मोहल्ला एलएसी का विचार

इन सबके बीच में समुदाय की मदद से बच्चों के लिए अपने मोहल्ले में ही शिक्षा की एक पहल के विचार के रूप में मोहल्ला लर्निंग एक्टीविटी सेंटर (एलएसी) की परिकल्पना उभरी। यह एक ऐसी जगह है, जहाँ हम पर्यावरण और एक

कछार के कोरकू मोहल्ले में रहने वाली 10 साल की नीतू की मानसिक स्थिति ठीक नहीं थी। उसके माता-पिता मज़दूरी का काम करते हैं। उनका घर भी मिट्टी व लकड़ी से बना है। केन्द्र पर आने के पहले नीतू बात-बात पर झगड़ा करती, रोने लगती, स्कूल जाने से कतराती, और घर के कामकाज में मदद करती थी। नीतू के पालक कहते हैं कि केन्द्र के दोस्तीनुमा माहौल से नीतू में कई बदलाव आए हैं और अब वह मन लगाकर सीख रही है। वह केन्द्र पर आने के लिए ख़ुशी-ख़ुशी तैयार होती है। अपनी बेटी में आए बदलावों से वो बहुत ख़ुश हैं।

दूसरे से सीखने के विचारों को बढ़ावा देते हैं। मोहल्ला एलएसी के उद्देश्यों को देखें तो पाएँगे कि इसका पहला उद्देश्य कोरोना काल में बच्चों को स्थानीय स्तर पर शिक्षण गतिविधियों से जोड़े रखना है, ताकि उनका सीखने का क्रम अविरल चलता रहे। इस प्रक्रिया से बच्चों को शुरुआती समझ के साथ अपने परिवेशीय ज्ञान के आधार पर सीखने-समझने के और अधिक मौक़े मिल पाएँ और ज़रूरतमन्द आदिवासी बहुल क्षेत्र के बच्चों की शैक्षिक मदद हो पाए।

दूसरा यह कि इस प्रक्रिया से तमाम भ्रान्तियाँ दूर करने में मदद मिली है, जैसे– कुछ लोग मानते हैं कि सीखने-समझने का कार्य सिर्फ़ स्कूल में ही सम्भव है, लेकिन ऐसा नहीं है। बहुत-से उदाहरण मोहल्ला एलएसी के संचालन के दौरान दिखाई दिए हैं, जहाँ बच्चे स्कूल में जिन दक्षताओं को कक्षा अनुरूप हासिल नहीं कर पाए थे, अब मोहल्ला क्लास में उन दक्षताओं को सहजता से हासिल कर रहे हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस काम में वह अपने घर के, आसपास के अन्य लोगों से भी मदद लेकर आपस में निरन्तर रूप से सीख रहे हैं।

मोहल्ला एलएसी के कुछ और उद्देश्य जिन्हें समुदाय, शिक्षक और एकलव्य मिलकर पूरा करने के प्रयास करते हैं :

- अनियमित बच्चों को नियमित कर शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना।
- व्यवहारिक समझ के साथ कार्य करने को प्रेरित करना।
- स्थानीय युवक / युवतियों को शिक्षण प्रणाली से जोड़ना।
- मूर्त से अमूर्त चिन्तन की ओर बढ़ना।
- समुदाय के साथ मिलकर और उसकी भागीदारी से कार्य करना।
- स्तरानुसार बच्चों की शैक्षणिक मदद करना।
- स्थानीय बोलचाल व भाषा के ज़रिए सीखना-सिखाना (बहुभाषिता)।
- स्थानीय माहौल के अनुरूप कार्य करना।
- समानता व समता के सिद्धान्तों के साथ शिक्षण कार्य करना।
- बिना डर के, ख़ुद करके सीखना।
- ज्ञान को स्कूल के बाहरी जीवन से जोड़ना।
- रटन्त प्रणाली से अलग, समझ-आधारित सोच विकसित करना।

मोहल्ला क्लास क्या है ?

मोहल्ला एलएसी स्कूल के बाहर समुदाय व एकलव्य के संयुक्त प्रयास से चलने वाला बच्चों का एक केन्द्र है। यहाँ बच्चों के साथ खेल-खेल में शिक्षण गतिविधियाँ कराई जाती हैं, जो बच्चों को सीखने-सिखाने में मदद करती हैं। बच्चों की झिझक दूर होती है, और वे खुलकर शिक्षण

गतिविधियों में भाग लेते हैं। स्थानीय संचालक की हर बच्चे पर नज़र होती है और स्तरानुसार वे उनकी मदद कर पाते हैं। मोहल्ला एलएसी में बच्चों की संख्या निश्चित अनुपात में होती है, जिससे हर बच्चे पर ध्यान देना सम्भव हो पाता है, और उसकी रुचि के अनुसार कार्य को प्राथमिकता दी जाती है।

अधिकांश शिक्षकों का मानना है कि उनपर शिक्षण कार्य के अलावा अन्य ज़िम्मेदारियाँ ज़्यादा होती हैं। इसके चलते जो मुख्य प्राथमिकता बच्चों के साथ कार्य करने की होती है, उसकी जगह उनकी ऊर्जा अन्य कामों में ज़्यादा लगती है और बच्चों के साथ उनका अकादमिक कार्य पिछड़ जाता है।

जबकि मोहल्ला एलएसी में बच्चों के साथ कार्य करना ही प्राथमिकता है, इसलिए यहाँ बच्चे समयानुसार एक गति से सीखते हैं। निरन्तर फ़ॉलोअप होता है, जिससे एक निश्चित क्रम में शिक्षण कार्य बच्चों के बीच हो पाता है।

मोहल्ला एलएसी में अनियमित बच्चों को खोजकर उनके साथ सघन रूप से कार्य हो पा रहा है। इस प्रक्रिया से अभी कुछ बच्चे ही जुड़े हैं, जो नियमित रूप से केन्द्र का हिस्सा हैं।

मोहल्ला एलएसी का केन्द्र संचालक या संचालिका अपने केन्द्र में पढ़ रहे बच्चों के पालक, समुदाय के सदस्य, स्थानीय शासकीय शिक्षकों और एकलव्य के साथ मिलकर यह प्रयास करता / करती है कि :

- मोहल्ला क्लास के ज़रिए स्थानीय स्तर पर शिक्षण वातावरण बना रहे।
- बच्चों के स्तर अनुरूप कार्य सरल और सहज रूप में हो सके।
- समुदाय के लोगों का शिक्षा के प्रति विश्वास और अधिक बढ़ सके।
- अनियमित बच्चों को अधिक संख्या में जोड़ा जा सके।
- व्यवहारिक / तार्किक समझ के साथ कार्य को प्राथमिकता मिल सके।
- बच्चों को परिभ्रमण व अन्वेषण का माहौल मिल सके।
- बच्चों में स्कूल के प्रति डर दूर हो सके।
- बच्चों की अभिव्यक्ति और अधिक बढ़ सके।

बच्चे को और उसकी सीखने की गति को समझना

बच्चे स्कूल में ज़्यादातर कार्य पाठ्यवस्तु के अनुसार करते हैं, और अधिकांश शिक्षक भी

हरिओम, करण और राहुल, कछार के कोरकू मोहल्ले के पक्के दोस्त हैं। तीनों की उम्र लगभग 10-11 साल के आसपास है। परिवार में माता-पिता को गुज़र-बसर के लिए मज़दूरी करने मुगलाई जाना होता है, और ये अपने परिवार की आजीविका चलाने में मदद करने के लिए बकरियाँ चराने जाते हैं। बकरी पर बैठना, और कंचे खेलना इन्हें बहुत पसन्द है, और स्कूल जाने के नाम से ही डर लगता था। इन तीनों बच्चों को सुबह-सुबह दो घण्टे के लिए लगभग तीन माह तक केन्द्र बुलाया गया, और इनकी मर्जी के अनुसार काम दिए गए। पहले इन्हें केन्द्र पर लाने के लिए मनुहार करनी होती थी, अब ये अपनी मर्जी से आ रहे हैं, केन्द्र पर पढ़ाई कर रहे हैं, और कहते हैं कि जब स्कूल खुलेगा तो स्कूल भी जाएँगे।

इसी प्रक्रिया को ज़्यादा कारगर समझते हैं। वे उसी क्रम में कार्य करवाते हैं। स्कूल में बच्चे के अनुभवों के लिए ख़ास जगह नहीं होती है। इस कारण से बच्चों की रुचि उस अधिगम में कम होती है, और बच्चों का सीखना प्रभावित होता है।

हर बच्चे को बढ़ती उम्र के अनुसार परिवार की तरफ़ से परवरिश और सहयोग मिलना ज़रूरी होता है। शिक्षक और बच्चों के बीच भी यही स्थिति है। उदाहरण स्वरूप, यदि किसी बच्चे को संख्या बोध में मुश्किल हो रही है और यदि उससे संक्रिया पर आधारित कार्य करवाया जाए तो ज़्यादा सम्भावना है कि यह बच्चे के अनुकूल न हो। इसलिए हर बच्चे की आवश्यकता को समझना शिक्षक का कर्तव्य होता है, क्योंकि हर बच्चा ख़ास होता है और कुछ शब्द भण्डार और परिवेशीय जानकारी लेकर स्कूल में आता है। यदि बच्चे को समझते हुए उसके अनुकूल कार्य दिया जाए तो उसकी सीखने की गति बढ़ती है, यदि नहीं तो इसका उलट हो जाता है।

मोहल्ला एलएसी इस पूरी सोच का जीवन्त उदाहरण है, जहाँ बच्चे को केन्द्र में रखकर उसके उसके परिवेश और व्यवहारिक जीवन की बातों को आधार बनाकर शिक्षण कार्य करवाया जाता है। इससे बच्चे काफ़ी सहज और जवाब देने को उत्सुक होते हैं, और उनकी बढ़ती तार्किकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

मोहल्ला एलएसी और समुदाय का जुड़ाव

केन्द्र पर पालकों व समुदाय के जुड़ाव के निम्न उद्देश्य हैं :

- समुदाय को शिक्षा से जोड़कर स्कूल व केन्द्र के वातावरण में बदलाव का प्रयास करना।
- बच्चों को सीखने के बारे में जागरूक करना।
- शिक्षा के नवाचार व केन्द्र प्रबन्धन में भागीदारी।

भौंरा की बिजली कॉलोनी में 11 साल की दुर्गा धुर्वे का घर है। दुर्गा के 2 भाई व 4 बहन हैं। दुर्गा उनमें सबसे छोटी है। खपरैल की छत के साथ कच्चा मकान है। वह खाना, बर्तन, कपड़े, झाड़ू सब काम कर लेती है। कक्षा 6 की दुर्गा को 10 तक गिनती भी नहीं आती थी। उनके स्कूल के शिक्षक ने दुर्गा को केन्द्र पर लाने का निवेदन किया। शुरुआत में चुप रहने वाली दुर्गा अब सरल शब्दों को पढ़ पाती है और शब्दों को जोड़कर लिख पाती है। अँग्रेज़ी में वह अल्फ़ाबेट्स पहचान पाती है, और वह अब अपना नाम हिन्दी व अँग्रेज़ी में लिख पाती है, साथ ही अपने माता-पिता का नाम भी लिख लेती है। गणित में उसकी संख्या की समझ 50 तक हो गई है, जिसमें वह संख्या बोध के साथ-साथ संक्रिया में जोड़-घटा भी कर लेती है।

समुदाय को शिक्षा से जोड़ना और साथ मिलकर वातावरण में बदलाव करने का यह प्रयास काम को बेहतर करने पर बल देता है। चूँकि मोहल्ला एलएसी समुदाय के बीच ही संचालित होता है, इसलिए यह बच्चे के निकट और अनुकूल होता है। बच्चे समयानुसार उमंग और उत्साह के साथ इसमें शामिल हो पाते हैं। जो बच्चे किन्हीं कारणों से नहीं आ पाते हैं, उन्हें मोहल्ला क्लास में लाने हेतु पालकों की मदद ली जाती है। हर केन्द्र में स्थानीय समिति का गठन होता है, जो केन्द्र पर नज़र रखती है। समिति सदस्य बच्चों को केन्द्र तक लाने में मदद करते हैं और बीच-बीच में बच्चों के माता-पिता भी यहाँ आकर अपने अनुभव या व्यवसाय के बारे में बच्चों से बातचीत करते हैं। उनके समय में पढ़ाई किस तरह हुआ करती थी, उस समय महँगाई की स्थिति क्या थी, आज क्या है, आदि बातों पर चर्चा करते हैं। इससे बच्चों को आत्मबल मिलता है, जो उन्हें सोचने व समझने में मदद करता है।

क्षेत्रीय भाषा का उपयोग करना

मोहल्ला एलएसी में बच्चे अपनी क्षेत्रीय भाषा, यथा– कोरकू, कतिया, गौली में भी बात करते

हैं, और शिक्षण कार्य में भी उसका उपयोग करते हैं। अपनी भाषा में कहानी, कविताओं का अनुवाद कर पोस्टर बनाते हैं, जिससे बच्चों के शब्द भण्डार में बढ़ोतरी के साथ ही अलग-अलग भाषाओं का ज्ञान होता है। उनकी झिझक दूर होती है, और कौशल एवं नेतृत्व क्षमताओं का विकास होता है।

कोरोना काल के बाद, इसे आगे चलाया जाना चाहिए या नहीं ?

ये अनुभव सुझाते हैं कि मोहल्ला एलएसी का संचालन निरन्तर किया जाना चाहिए क्योंकि यह सुरक्षा की दृष्टि से और सोच एवं समझ के साथ कार्य करने का एक अच्छा केन्द्र है। मोहल्ला एलएसी से स्थानीय शिक्षा व्यवस्था में हमें निम्न चीज़ें होती देखने को मिली :

- जिस गाँव में मोहल्ला क्लास संचालित की जाती है वहाँ पढ़ाने वाला साथी स्थानीय होती / होता है जो हमेशा बच्चों की पहुँच में होती / होता है।
- स्थानीय युवक-युवतियों को अपने शैक्षणिक कौशलों को एक शिक्षक के रूप में बढ़ाने का मौक़ा मिलता है।
- प्राथमिक स्तर पर बच्चों के लिए कक्षा 3 से 5 सीखने के आधार वर्ष होते हैं, जिसमें उनसे यह अपेक्षा होती है कि वे भाषा में पढ़ना, लिखना, समझना और गणित में संख्या बोध एवं संक्रिया पर कार्य की समझ विकसित कर सकें। इसके लिए मोहल्ला एलएसी में बच्चों को व्यावहारिक जीवन से जोड़कर मूर्त से अमूर्त चिन्तन, कंकड़, पत्थर, तीली-बण्डल जैसी शिक्षण अधिगम सामग्री की मदद से और अधिक सन्दर्भयुक्त माहौल मिल पाता है।

हाशियाकृत समुदाय और साधन विहीन परिवारों के बच्चों के लिए ये मोहल्ला गतिविधि केन्द्र एक तरह से सीखने-सिखाने की एक समुदाय-आधारित और कहीं ज़्यादा समावेशी जगह बनकर उभरे हैं।

- कार्यक्रम के विस्तार को थोड़ा बदला जा सकता है लेकिन बन्द किया जाना ठीक नहीं होगा।
- समुदाय की भागीदारी बढ़ाकर इसे और बेहतर बनाया जा सकता है।
- इस प्रक्रिया से शाला त्यागी बच्चों का का आँकड़ा बहुत कम हो सकता है, और बच्चे स्कूल से जुड़े रहेंगे।
- गाँव-मोहल्ले में ऐसे शिक्षित वॉलेंटियर तैयार करना जो बच्चों की स्थानीय स्तर पर मदद हेतु आगे आ सकें।

समुदाय के अपने निजी परिवेश और सहज अनौपचारिक ढाँचे में चलने वाले ये केन्द्र बच्चों के सीखने को ज़्यादा अर्थपूर्ण बना रहे हैं।

लेख के सभी चित्र एकलव्य फ़ाउण्डेशन से साभार

क्षमा, पिछले 5 सालों से एकलव्य संस्था शाहपुर में कक्षा 1 से 8 तक के बच्चों के साथ मोहल्ला एलएसी जैसे अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र में काम करती हैं। बच्चों की शिक्षा और गाँव की महिलाओं और युवतियों के साथ महिला स्वास्थ्य पर काम करने में रुचि है।
सम्पर्क : ykshama70@gmail.com

खेमप्रकाश, पिछले 6 सालों से एकलव्य शाहपुर में बच्चों की शिक्षा को लेकर कार्यरत हैं। बच्चों के साथ केन्द्र संचालन के बाद अभी अपने क्षेत्र में ऑनलाइन माध्यमों से बच्चों को शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं।
सम्पर्क : khemyadav1990@gmail.com

निदेश, लगभग 3 साल मुस्कान संस्था भोपाल के साथ और पिछले 14 सालों से एकलव्य संस्था के साथ काम कर रहे हैं। बच्चों और शिक्षकों के साथ गणित सीखने में रुचि है। मध्यप्रदेश व राजस्थान राज्य सरकारों की गणित पाठ्यपुस्तक लेखन समिति में शामिल रह चुके हैं।
सम्पर्क : nideshsoni@gmail.com